चतुर्थ अध्याय

महाकाव्य के तत्त्वों के आधार पर विवेच्य काव्य का अनुशीलन

चतुर्थ अध्याय
"महाकाव्य के तत्त्वों के आधार पर विवेच्य काव्य का अनुशीलन"

प्रस्तावना :

साहित्य और समाज का संबंध बहुत ही गहरा है। साहित्यकार समाज की एक महत्त्वपूर्ण इकाई है। वह अपने साहित्य या कृति में समाज में घटित घटनाओं का वर्णन करता है। साहित्य का पर्यायीवाची शब्द 'काव्य' हैं। काव्य यह एक रचना है। इसका संबंध सृजनात्मक या रचनात्मक प्रतिभा से होता है। अनेक विद्वानों ने काव्य के लक्षण दिए हैं। उनमें आ.भामह ने कहा है कि "शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्"[1] याने शब्द और अर्थ के सहित भाव को काव्य कहते हैं। साहित्य या काव्य के गद्य और पद्य यह दो भेद होते हैं। इसमें पद्य के प्रबंध काव्य और मुक्तक काव्य ये भेद होते हैं। प्रबंध काव्य के कथानक में सुगठितता होती है और उसका एक दूसरे के साथ संबंध होता है। तथा मुक्तक काव्य स्वतंत्र होता है। प्रबंध काव्य के पुराण, आख्यान और काव्य यह भेद होते हैं। इनमें से काव्य के अंतर्गत महाकाव्य, खंड़काव्य और प्रगीत काव्य यह भेद होते हैं। अत: हम महाकाव्य की जानकारी निम्नलिखित प्रकार से देखते हैं।

4.1 महाकाव्य का स्वरूप :

अंग्रेजी में महाकाव्य के लिए 'एपिक' (Epic) यह समानार्थी शब्द है। 'महाकाव्य' यह शब्द 'महा' और 'काव्य' इन दो शब्दों से बना है। महाकाव्य यह काव्य की अत्यंत प्राचीन विधा है। अपनी उदात्त शैली और व्यापक दृष्टि के कारण महाकाव्य हर युग को प्रेरणा देने का काम करता हैं। महाकाव्य में जीवन की समग्र जानकारी नायक के माध्यम से प्रस्तुत की जाती है। महाकाव्य की कथा किसी व्यक्ति से संबंधित नहीं होती बल्कि वह समस्त समाज का दर्पण होता है। उसमें मानव समाज का इतिहास प्रवाहित होता है।

---

[1]. भगीरथ मिश्र - काव्यशास्त्र, पृ. 5

महाकाव्य का कलेवर विशाल होता है। महाकाव्य में जीवन की समग्र जानकारी का वर्णन होता है। महाकाव्य के वारे में भारतीय तथा पाश्चात्य आचार्यों ने अपने-अपने विचार प्रस्तुत किए हैं। अत: हम महाकाव्य की परिभाषा निम्नलिखित प्रकार से देखते हैं।

4.2 महाकाव्य की परिभाषा :

महाकाव्य की परिभाषा अनेक विद्वानों ने दी है। उनमें से कुछ विद्वानों की परिभाषा निम्नलिखित प्रकार से देखते हैं -

1. 'प्रामाणिक हिंदी कोश' में लिखा है कि महाकाव्य याने "वह बड़ा सर्गबद्ध काव्य-ग्रंथ जिसमें प्राय: सभी रसों, ऋतुओं और प्राकृतिक दृश्यों आदि का वर्णन हो।"[1]
2. रामचद्र वर्मा जी ने "बहुत वड़े और विस्तृत काव्यग्रंथ"[2] को महाकाव्य कहा है।
3. डॉ. गुलाबराय के अनुसार "महाकाव्य यह विषय प्रधान काव्य है कि, जिसमें अपेक्षाकृत बड़े आकार में जाति में प्रतिष्ठित और लोकप्रिय नायक के उदात्त कार्यों द्वारा जातीय भावनाओं, आदर्शों, आकांक्षाओं का उद्घाटन किया जाता है।"[3]
4. डॉ. गोविंदराम शर्मा जी ने महाकाव्य की परिभाषा इस प्रकार की है "महाकाव्य एक ऐसी छन्दोवद्ध प्रकथनात्मक रचना होती है, जिसमें विषय की व्यापकता और नायक की महानता के साथ-साथ कथावस्तु की एक सूत्रता, छलकता हुआ रस-प्रवाह, वर्णन-विशदता, उदात्त भाषा-शैली, जीवन का यथासाध्य सर्वांगिण चित्रण और जातीय भावनाओं तथा संस्कृति की सुंदर अभिव्यक्ति हो।"[4]

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर कहा जा सकता हैं कि महाकाव्य एक सर्गबद्ध रचना है, उसका कलेवर विशाल होता है, उसकी कथा इतिहास प्रसिद्ध महान व्यक्ति के जीवन पर आधारित हो, उसमें प्रकृति चित्रण तथा छंदों का वर्णन भी किया जाता है।

---

[1]. संपा. रामचंद्र वर्मा - प्रामाणिक हिंदी कोश, पृ.891
[2]. संपा. रामचंद्र वर्मा - मानक हिंदी कोश- चौथा खंड़, पृ.315
[3]. डॉ. लालता प्रसाद सक्सेना - हिंदी महाकाव्यों में मनोवैज्ञानिक तत्व-प्रथम भाग, पृ.19
[4]. वही, पृ. 22

4.3 महाकाव्य के तत्त्व :

आ. मम्मट ने 'अग्निपुराण' में सर्वप्रथम महाकाव्य के तत्त्वों को निर्धारित किया है। इसका विवरण हम निम्नलिखित प्रकार से करते हैं।

4.3.1 कथावस्तु :

महाकाव्य की कथावस्तु के बारे में डॉ. भगीरथ मिश्र जी ने कहा है कि, "महाकाव्य की कथा विस्तृत और पूर्ण जीवन-गाथा होती है। कथा का प्रारंभ आशीर्वचन, मंगलाचरण आदि से होना चाहिए और सर्ग के अन्त में आगामी सर्ग की कथा की सूचना होनी चाहिए। तथा महाकाव्य की कथा इतिहास से अथवा किसी महापुरूष सज्जन की वास्तविक जीवन गाथा के आधार पर होनी चाहिए।"[1] इसके साथ ही महाकाव्य की कथा कम से कम आठ सर्ग या इससे अधिक सर्गों में विभाजित हो। कथावस्तु समाज को महान संदेश देने योग्य होनी चाहिए। इसमें एक मुख्य कथा होती है और उसे सहाय्यता देने के लिए सहाय्यक कथा होती है। इस प्रकार की सारी बातों की जानकारी महाकाव्य की कथावस्तु में होनी चाहिए।

4.3.2 नायक तथा अन्य पात्र :

भारतीय आचार्यों ने महाकाव्य के अंतर्गत नायक को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है। डॉ. भगीरथ मिश्र जी ने महाकाव्य के नायक के बारे में अपने विचार प्रकट करते हुए कहा है कि, "महाकाव्य का नायक कोई देवता, उच्चकुल से उत्पन्न क्षत्रिय अथवा एक वंश में उत्पन्न हुए राजा और अनेक वंशों में उत्पन्न राजा हो सकते हैं।"[2] साथ ही नायक चतुर, उदात्त, सुंदर, विद्वान, व्यवहार कुशल, सदाचरणी, कीर्ति संपन्न आदि गुण उसमें होने चाहिए। महाकाव्य में नायक के साथ नायिका का स्थान भी महत्त्वपूर्ण होता है। इसके साथ ही नायक के चरित्र को उजागर करने के लिए अन्य पात्रों की योजना महाकाव्य में होती है।

4.3.3 रस :

महाकाव्य में सभी रसों का वर्णन होना आवश्यक माना जाता है। रस के बारे में डॉ. भगीरथ मिश्र ने कहा है कि, "कथावस्तु और चरित्र में एक निश्चित एवं क्रमबद्ध विकास

---

[1]. डॉ. भगीरथ मिश्र - काव्यशास्त्र, पृ.57

[2]. वही, पृ. 57

के लिए शृंगार, वीर और शांत इन तीन रसों में से एक रस का होना आवश्यक माना गया है।"[1] इसके साथ ही महाकाव्य में वीच-वीच में प्रसंग के अनुसार अन्य रसों का वर्णन होना चाहिए।

4.3.4 छंद :

महाकाव्य में छंदों के बारे में डॉ. भगीरथ मिश्र जी ने कहा है कि, "कथा के विकास और प्रवाह की अबाध गति के लिए एक सर्ग में एक ही छंद के प्रयोग का नियम है, सर्ग के अंत में छंद बदलना चाहिए।"[2] साथ ही महाकाव्य में चमत्कार, वैविध्य की निर्मिती करने के लिए एक सर्ग में विविध छंदों का प्रयोग होना आवश्यक माना जाता है।

4.3.5 वर्णन :

महाकाव्य में विविधता और यथार्थता होती है। डॉ. भगीरथ मिश्र के अनुसार "महाकाव्य के भीतर जीवन के सभी दृश्यों, प्रकृति के विभिन्न रूपों और विविध भावों का वर्णन होना चाहिए।"[3] साथ ही महाकाव्य में कही कही सज्जनों की प्रशंसा और दुर्जनों की नींदा होती है। तथा प्रकृति के विविध दृश्यों का, ऋतुओं का, नगर, उद्यान, उत्सव, चंद्र, सूर्य आदि का वर्णन किया जाता है।

4.3.6 भाषा-शैली :

भाषा और शैली का स्थान महाकाव्य के अंतर्गत महत्त्वपूर्ण माना जाता है। इन दोनों का संबंध अटूट और गहन होता है। महाकाव्य की भाषा-शैली के विषय में डॉ. कृष्णदेव झारी ने कहा है कि, "भाषा-शैली महाकाव्य का अनिवार्य महत्त्वपूर्ण तत्त्व हैं। भाषा में सरलता, सजीवता, स्वाभाविकता, भावानुरूपता, प्रभावोत्पादकता, स्वाभाविक अलंकार, लाक्षणिक व्यंजक प्रयोग, मुहावरे, लोकोक्तियों आदि का कलात्मक प्रयोग भाषा-शैली के सब गुण होने चाहिए।"[4]

---

[1]. डॉ. भगीरथ मिश्र - काव्यशास्त्र, पृ.57
[2]. वही, पृ.57
[3]. वही, पृ. 58
[4]. डॉ. कृष्णदेव झारी - काव्यशास्त्रीय निबंध, पृ.189

4.3.8 नाम / शीर्षक :

महाकाव्य का नाम कवि नायक अथवा कथातत्त्व के आधार पर रखता है। साथ ही अन्य पात्र के नाम पर भी काव्य ग्रंथ का नामकरण किया जा सकता है।

4.3.8 उद्देश्य :

महाकाव्य का उद्देश्य धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष आदि की प्राप्ति माना गया है। इसके साथ ही डॉ. कृष्णदेव झारी ने कहा है कि, "महाकाव्य में त्याग, प्रेम, साहस, उदारता, वीरता, दया, क्षमा आदि मानवीय सदप्रवृत्तियाँ रहती थी। पाठक के रागों का परिष्कार करने तथा उदात्त भावों को जगाने के अतिरिक्त महाकाव्य में जीवन की समस्याओं का चित्रण करके जीवन के स्वस्थ निर्माण की प्रेरणा देना महाकाव्य का उद्देश्य होना चाहिए।"[1]

इस प्रकार भारतीय आचार्यों ने महाकाव्य के तत्त्व निश्चित किए हैं।

4.4 महाकाव्य के तत्त्वों के आधार पर 'भीमकथाअमृतम्' काव्य का अनुशीलन:

उपर्युक्त दिए गए तत्त्वों के आधार पर 'भीमकथाअमृतम्' महाकाव्य का अनुशीलन निम्नलिखित प्रकार से किया जा सकता है।

4.4.1 कथावस्तु :

'भीमकथाअमृतम्' महाकाव्य के रचयिता रामदास निमेश जी है। प्रस्तुत काव्यग्रंथ का प्रकाशन अक्तूबर, सन् 1992 ई. को हुआ है। काल की दृष्टि से देखा जाए तो विवेच्य महाकाव्य बीसवीं सदी के अंतिम दशक में लिखा गया है। प्रस्तुत महाकाव्य की कथा डॉ. भीमराव रामजी अम्बेडकर जी के जीवन पर आधारित है। प्रस्तुत महाकाव्य की कथावस्तु प्रसिद्ध जीवनी लेखक धनंजय कीर द्वारा लिखित 'डॉ. अम्बेडकर-लाइफ एण्ड मशिन', श्री जिज्ञासू द्वारा लिखित 'बाबासाहब का जीवन संघर्ष', श्री विजय कुमार पुजारी की 'बाबासाहब के जीवन' पर लिखि पुस्तक तथा महापण्डित श्री राहुल सांस्कृत्यायन जी के 'बौद्ध दर्शन' आदि ग्रंथों से आवश्यक सामग्री ली गयी है।

---

[1]. डॉ. कृष्णदेव झारी - काव्यशास्त्रीय निबंध, पृ.189

विवेच्य महाकाव्य का सृजन महाकवि ने नौ स्कन्धों (सर्गों) में किया है। इसमें डॉ.अम्वेडकर के वचपन से लेकर महापरिनिर्वाण तक की कथा प्रस्तुत की है और अम्वेडकर को अपने जीवन में आई कठिनाइयों का तथा तत्कालीन युग की समस्याओं का वर्णन मिलता है। प्रस्तुत महाकाव्य के वारे में कालीचरण गौतम जी का कहना है कि, "तुलसीदास जी के पौराणिक श्री रामचंद्र को केवल एक ही काल्पनिक रावण के साथ संघर्ष करना पड़ा था और इस संघर्ष में उन्हें पवनपुत्र महाबली हनुमान, सुग्रीव, जामवंत और उनकी सेनाओं की सहायता लेनी पड़ी थी। उसके बाद छल-कपट और फूट का आश्रय लेकर रावण की हत्या की गई। लेकिन आधुनिक युग में युगपुरूष बाबासाहब डॉ.भीमराव अम्बेडकर जीवन पर्यन्त अकेले ही एक नहीं वरन् करोडों रावणों से सूझते रहे, जिसका सजीव एवं बेजोड़ चित्रण इस महाकाव्य में किया है।"[1]

महाकवि ने प्रस्तुत महाकाव्य में अनेक पात्रों का चित्रण किया है।उन पात्रों के माध्यम से नायक के चरित्र को उजागार करणे का सफल प्रयास महाकवि ने किया है।महाकाव्य में वीर, करूण, शृंगार, वात्सल्य तथा रौद्र आदि रसों का वर्णन मिलता है। तत्सम, तद्भव, विदेशी आदि शव्दों का प्रयोग विवेच्य काव्यग्रंथ में मिलता है। महाकाव्य की भाषा के बारे में कालीचरण गौतम जी का कहना है कि,"इसकी भाषा कृत्रिमता से बोझिलपन एवं आडंबर से रहित है। वह सुवोध, सरस एवं हृदयस्पर्शी है। कवि के द्वारा ग्रंथ को सहज वनाने के लिए दोहा, चौपाई आदि छंदों का सार्थक एवं स्वाभाविक प्रयोग किया गया है। आवश्यकता पड़ने पर अलंकारों का प्रयोग ग्रंथ के सौंदर्य एवं कलात्मक पक्ष में चार चाँद लगा रहा है।"[2] इसके साथ ही महाकवि ने तुकांत इस छंद का प्रयोग अच्छी तरह से किया है। विवेच्य महाकाव्य की कथावस्तु को आगे वढाने के लिए महाकवि ने प्रकृति चित्रण, ऋतु वर्णन, सत्याग्रह, सभा, विवाह आदि का वर्णन अच्छी तरह से किया है।

महाकाव्य के प्रथम स्कन्ध में महाकवि ने डॉ.अम्वेडकर जी के पारिवारिक पृष्ठभूमि तथा उनके वचपन का वर्णन किया है। द्वितीय स्कन्ध में सामाजिक व्यवस्था तथा

---

[1]. रामदास निमेश - भीमकथाअमृतम्, दो शव्द से उदधृत

[2]. वही, दो शव्द से उदधृत.

अम्बेडकर जी की शिक्षा का परिचय दिया है। तृतीय स्कन्ध में अम्बेडकर द्वारा किए सत्याग्रहों का वर्णन किया है। चतुर्थ स्कन्ध में गोलमेज सम्मेलन तथा अम्बेडकर जी के द्वारा किए संघर्षों का वर्णन मिलता है।

पंचम स्कन्ध में द्वितीय गोलमेज सभा, पूना पैक्ट, कम्युनल अवार्ड आदि का वर्णन महाकवि ने किया है। षष्ठम स्कन्ध में उनके पत्नी के निधन का, मुंबई विधान सभा के चुनाव का वर्णन किया है। सप्तम स्कन्ध में अम्बेडकर जी के श्रममंत्री बनने का तथा संविधान समिती अन्तरिम सरकार के गठन का वर्णन किया है। अष्टम् स्कन्ध में हिंदू धर्म के बारे में हुई चर्चा का तथा अम्बेडकर के द्वारा विधिमंत्री पद त्याग देने का वर्णन मिलता है। नवम् स्कन्ध में डॉ. अम्बेडकर के द्वारा बौद्ध धर्म अपनाने का तथा उनके महापरिनिर्वाण का वर्णन महाकवि ने किया है।

इस प्रकार की सारी घटनाओं का वर्णन महाकवि निमेश जी ने 'भीमकथाअमृतम्' महाकाव्य की कथावस्तु में किया है।

4.4.2 नायक तथा अन्य पात्र :

4.4.2.1 डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर :

महाकवि निमेश जी ने 'भीमकथाअमृतम्' महाकाव्य का सृजन नौ सर्गों में किया है। प्रस्तुत महाकाव्य डॉ. अम्बेडकर जी के जीवन पर आधारित है।विवेच्य महाकाव्य में महाकवि ने डॉ.अम्बेडकर जी को नायक के रूप में प्रस्तुत किया है। अत: हम विवेच्य महाकाव्य के नायक डॉ.अम्बेडकर जी के चरित्र के विविध पहलुओं को निम्नलिखित प्रकार से देखते हैं।

4.4.2.1.1 पांडित्यपूर्ण व्यक्तित्त्व :

डॉ. अम्बेडकर जी बचपन से तेज बुद्धि के थे। उनकी शरीरयष्टि मजबूत थी। उनका वर्ण गोरा और बाल घूँघराले थे। वे स्वभाव से जिद्दी निर्भिक और शरारती थे। बड़े होने पर उन्होंने अर्थशास्त्र, संस्कृति, इतिहास, विधि तथा राजनीति आदि विषयों का अध्ययन किया। वे अपना अधिक से अधिक समय अध्ययन में बिताते थे। उन्होंने गहन

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

अध्ययन करके 'एम.ए., पीएच.डी., डी.एस.सी., एल.एल.डी.,डी.लिट, और बार.ॲट. लॉ.' आदि उपाधियाँ प्राप्त की थी। इसका वर्णन महाकवि ने इस प्रकार किया है -

"सन् इक्कीस में भीमराव ने, दो दो डिग्री हासिल कर ली।
लन्दन यूनीवर्स्टी से एम.एस.सी., डी.एस.सी. पढ़ ली ॥
सन् तेइस में बार. एट.लॉ. भी डिग्री हासिल कर ली ।
तीन वर्ष तक मितभौजी रह, गुरूत्तर ज्ञान साधना कर ली ॥"[1]

डॉ. अम्बेडकर की प्रशस्ति के बारे में कुबेर जी का मत है कि "वे लब्ध प्रतिष्ठ विद्वान, अथक परिश्रमी, योग्यतम वकिलों में से एक प्रमुख सांसद और भारतीय समाज के पिछड़े और दलित समाज के एक महान समर्थक है।"[2] डॉ. अम्बेडकर विभिन्न प्रकार के किताबों को खरीद कर अपनी ज्ञान अर्जन करने की लालसा को पूरी करते थे। इसका वर्णन निमेश जी ने निम्नलिखित प्रकार से किया हैं -

"बढ़ी पिपासा ज्ञानार्जन की, मन में लगन लगी भारी,
एक ध्येय था, एक लक्ष था, उनके मन में प्रिय शुभकारी ।
चुन चुन उत्तम ग्रंथ रत्न, सब भर डाली थी अलमारी,
दो हजार ग्रंथों का संग्रह, कर डाला विस्मयकारी ॥"[3]

डॉ. अम्बेडकर जी ने खरीदे हुए किताबों को रखने के लिए अपने 'राजगृह' नामक घर में एक अलग कमरे में ग्रंथालय बनाया था।उनमें अर्थशास्त्र, कानून, धर्म, दर्शन, समाजवाद, संविधानिक आदि विषयों पर आधारित ग्रंथ थे। इन विषयों के अध्ययन के साथ-साथ उन्होंने विश्वविख्यात विश्वविद्यालयों से सर्वोच्य उपाधियाँ प्राप्त की थी।

उपर्युक्त जानकारी के आधार पर कहा जा सकता है कि डॉ.अम्बेडकर जी का व्यक्तित्व पांडित्यता से परिपूर्ण था।

---

[1]. रामदास निमेश - भीमकथाअमृतम्, पृ.73
[2]. डब्ल्यू. एन. कुवेर - भीमराव अम्बेडकर, पृ.79
[3]. रामदास निमेश - भीमकथाअमृतम्, पृ.48

4.4.2.1.2 शिक्षाविद् :

भारत देश में शिक्षा के क्षेत्र में योगदान देनेवाले शिक्षातज्ञों में डॉ.अम्बेडकर जी का स्थान शीर्षस्थ है। उनको छात्र काल से ज्ञानार्जन करते समय उच्चवर्गियों के द्वारा अपमानित होना पड़ा था। इसके कारण अपने दलित जाति के छात्रों को इस प्रकार के अपमानों का सामना न करना पड़े, तथा उनको सहज रूप से शिक्षा प्राप्त हो इसलिए 'पिपल एज्यूकेशन सोसायटी' नामक शिक्षा संस्था की स्थापना की। इस संस्था के माध्यम से मुंबई में 'सिद्धार्थ कॉलेज' और औरंगाबाद में 'मिलिंद कॉलेज' का निर्माण किया।इसका वर्णन महाकवि निमेश जी ने इस प्रकार किया है -

"चिर पोषिक इक सपन सुहाना | वैज्ञानिक उपकरण मंगाना ||
संस्थान आदर्श बनाया | मध्यवर्ग अनुसूचित हित जाना ||
बुनियादी पत्थर रखवाना | प्यूपल शिक्षा संस्थान बनाया ||
बीस जून छयालीस सुहानी | कालिज की रचना करि आनी ||
आधार शिला रख के किया, कुँवर स्वपन साकार |
सिद्धार्थ नाम देकर उसे पाया हर्ष अपार ||"[1]

अम्बेडकर जी ने दलित जाति के लोगों को 'शिक्षित बनो, संगठित बनो और संघर्ष करो' यह मंत्र दिया था। साथ ही उनके नारी शिक्षा से संबंधित विचार भी सराहनीय थे। उनका कहना था कि लड़कियों को लड़कों के साथ शिक्षा मिलनी चाहिए। इसमें उन्हें साहित्य के साथ गृह-विज्ञान की शिक्षा मिलनी चाहिए। इस शिक्षा के कारण उनका गृहस्थी जीवन सफल बन सकता है।

उपर्युक्त बातों के आधार पर कहा जा सकता है कि, डॉ. अम्बेडकर जी के शिक्षा संबंधी विचारों से समाज में परिवर्तन निर्माण हो सकता है। और सामान्य जनता को शिक्षा के सुअवसर प्राप्त हो जाते हैं। इन्हीं विचारों के कारण शिक्षा के क्षेत्र में उनका स्थान महत्त्वपूर्ण माना जाता है।

---

[1]. रामदास निमेश - भीमकथाअमृतम्, पृ.280-281

4.4.2.1.3 अर्थशास्त्री :

डॉ. अम्बेडकर मूलत: अर्थशास्त्री थे। उन्होंने अर्थशास्त्र इस विषय में एम्.ए. की उपाधि प्राप्त की थी। तथा उन्होंने एम.एस.सी. के लिए 'इवोल्यूशन ऑफ प्रिव्हिन्सियल फाइनैंस इन ब्रिटिश इंडिया' नामक शोध-प्रबंध लिखा था। डी.एस.सी. के लिए 'प्रोब्लेम ऑफ द रूपीज' इस शोध निबंध में अम्बेडकर जी ने मुद्रा समस्या संबंधी अपना मत प्रस्तुत किया है। इसके आधार पर डॉ.अम्बेडकर जी की विद्वत्ता और अथक परिश्रमी व्यक्तित्व की जानकारी का पता चलता है। डॉ. अम्बेडकर जी की विद्वत्ता का वर्णन महाकवि ने इस प्रकार किया है -

"ज्ञानवान विद्वान कहाये | अर्थशास्त्र स्तम्भ बताये ||
नीति शास्त्र के चतुर चितेरे | वंश शास्त्र विद्वान घनेरे ||
स्वस्थ सुगढ़ व्यक्तित्त्व सुहाना अनुपम योगी विश्व बखाना ||
धीर, वीर गम्भीर कहाये | बाबा अपनी राय बताये ||"[1]

इस प्रकार की जानकारी के आधार पर कहा जा सकता है कि डॉ. अम्बेडकर एक अच्छे अर्थशास्त्री थे।

4.4.2.1.4 भाषाविद या भाषाप्रभुत्व :

डॉ. अम्बेडकर जी को विश्व की विभिन्न भाषाओं का ज्ञान था। उन भाषाओं में पार्सियन, संस्कृत, हिंदी, जर्मन, मराठी, फ्रेंच,अंग्रेजी, पालि तथा गुजराती आदि का स्थान महत्त्वपूर्ण था। तथा इन सभी भाषाओं पर उनका जबरदस्त अधिकार था। इसका वर्णन महाकवि निमेश जी ने इस प्रकार किया है -

"असंभव को संभव कर डाला | भाषा ग्रन्थों को मथ डाला ||
अल्प काल में भाषा सीखी | संस्कृत, जर्मन, फ्रेंच सरीखी ||
हिंदी, इंगलिश और मराठी | छ: भाषा के बने सुपाठी ||"[2]

---

[1]. रामदास निमेश - भीमकथाअमृतम्, पृ. 289
[2]. वही, पृ. 74

डॉ. अम्बेडकर जी को इन भाषाओं का ज्ञान होने का कारण यह है कि उनकी मातृभाषा मराठी थी। इसमें उन्होंने 'बहिष्कृत भारत', 'प्रबुद्ध भारत', 'जनता' और 'मूकनायक' नामक समाचार पत्र-पत्रिकाओं का निर्माण किया। इसके साथ ही स्कूली जीवन में उन्होंने संस्कृत और पार्सियन भाषा का ज्ञान प्राप्त किया था। अमेरिका और इंग्लैंड में शिक्षा लेने के कारण अंग्रेजी भाषा का ज्ञान उन्हें था।

उपर्युक्त जानकारी के आधार पर कहा जा सकता है कि डॉ.अम्बेडकर जी ने अनेक भाषाओं पर जबरदस्त अधिकार प्रस्थापित किया था।

4.4.2.1.5 समाजक्रांतिकारक :

डॉ. अम्बेडकर जी सिर्फ शिक्षाविद, अर्थतज्ञ ही नहीं थे बल्कि उनको समाजक्रांतिकारक के रूप में भी हम देखते हैं। समाज में दलितों के लिए उन्होंने अनेक प्रकार के कार्य किए हैं। अम्बेडकर जी ने दलितों को सामान्य जनता की तरह सभी हक्क तथा अधिकार दिलाने के लिए सत्याग्रह किए। उन सत्याग्रहों में 'महाड तालाब सत्याग्रह', 'मनुस्मृति का दहन', 'कालाराम मंदिर प्रवेश सत्याग्रह', 'हिंदू कोड बिल', 'पूना पैक्ट', 'महार वतन' तथा बौद्ध धर्म में प्रवेश' आदि का स्थान महत्त्वपूर्ण माना जाता है। इन सत्याग्रहों के माध्यम से उन्होंने समाज में क्रांति लाने का कार्य किया है। इन सत्याग्रहों में से 'बौद्ध धर्म में प्रवेश' यह विश्व की एकमात्र ऐसी घटना है कि वह रक्त विहीन क्रांति रही है। इनमें से 'महाड तालाव सत्याग्रह' का वर्णन महाकवि निमेश जी ने निम्नलिखित प्रकार से किया है -

"करि प्रतिकार पियें जल सारे | मेरे पीछे आओ सारे ||
बने आग्रणी भीमराव थे | सवके मन सम्मान भाव थे ||
ले जलूस चवदार पे आई | जन सागर सा पड़े लखाई ||
तृण तृण जोरि बनाया गठ्ठर | शक्ति पुंज बन गया महत्तर ||
भीमराव डंकार लगाई | जनता उमडि जोश भरिलाई ||
प्रथम पिया जल भीमराव ने | वहुरि पिया सब महानुभाव ने ||"[1]

---

[1]. रामदास निमेश - भीमकथाअमृतम, पृ. 92

डॉ. अम्बेडकर जी अन्याय अत्याचार करनेवालों के खिलाफ थे। वे एक मानवतापेमी और कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति थे। उनका आदर्श समाज के वारे में यह मत था कि, "आदर्श समाज वही है जो स्वतंत्रता, समानता और भ्रातृत्व पर निर्भर है।"[1] डॉ. अम्बेडकर जी ने कवीरदास जी की तरह समाज में होनेवाली जाति प्रथा और चार्तुवर्ण्य को पाखंड़ माना है। उन्होंने भारतीय समाज में स्थित छुआछूत और जातिप्रथा आदि समस्याओं का विरोध किया है। कुबेर जी का मत है कि, "अम्बेडकर ने जातिप्रथा को मूर्खतापूर्ण और अत्याचार करनेवाली व्यवस्था बताया और उन्होंने ब्राह्मणवाद की आलोचना की है।"[2] इस प्रकार उन्होंने समाज में क्रांति लाने का कार्य किया है।

उपर्युक्त सारी जानकारी के आधार पर कहा जा सकता है कि डॉ. अम्बेडकर जी एक अच्छे समाजक्रांतिकारक थे।

4.4.2.1.6 साहित्यिक विचारतज्ञ :

डॉ. अम्बेडकर जी ने तथागत गौतम बुद्ध, संत कबीर और महात्मा ज्योतिराव फुले को अपने गुरू के रूप में स्थान दिया था। तथा वे इनके विचारों से काफी प्रभावित थे। इन तीनों के प्रभाव के कारण उनके विचार तर्कनिष्ठित थे और उनकी दृष्टि विज्ञानवादी थी। डॉ. अम्बेडकर जी ने अथक परिश्रम करके 'बुद्ध ॲन्ड़ हिज धम्म', 'हू वेअर द शुद्रास', 'कास्टस् इन इंडिया', 'थॉटस ऑन पाकिस्तान', 'अनीहिलेशन ऑफ कास्टस्', 'रानडे ॲन्ड जीना', 'प्रोब्लेम ऑफ द रूपीज्', 'द अनटचेवल', रिडल्य इन हिंदूझम', बुद्ध और मार्क्स', तथा 'भारतीय संविधान' आदि महान ग्रंथों की रचना की है। इन सारे ग्रंथों के द्वारा उनके सत्यशोधक विचारों का परिचय मिलता है। डॉ. अम्वेडकर जी के द्वारा लिखे 'बुद्ध ॲन्ड हिज धम्म' इस ग्रंथ के बारे में महाकवि निमेश जी कहते हैं कि -

"बुद्ध हिज धम्मा लिख दीना | वौद्ध धर्म परिशोधन कीना ||
अनुपम धर्म ग्रंथ रचि राखा | हुयी सफल उनकी अभिलाषा ||"[3]

---

[1]. डब्ल्यू. एन. कुवेर - भीमराव अम्वेडकर, पृ. 86
[2]. वही, पृ. 87
[3]. रामदास निमेश - भीमकथाअमृतम्, पृ.371

उपर्युक्त बातों से हमें पता चलता है कि डॉ. अम्बेडकर जी एक प्रसिद्ध साहित्यिक, विचारतज्ञ थे।

4.4.2.1.7 संघर्षशील :

डॉ. अम्बेडकर जी ने बचपन से लेकर जीवन के अंतिम समय तक समाज में प्रचलित कुप्रथाओं के विरूद्ध आवाज उठाई थी। डॉ. अम्बेडकर जी के द्वारा किए संघर्षों के बारे में कुबेर जी का मत है कि, "डॉ. अम्बेडकर ने जो सामाजिक संघर्ष छेड़े उनका उद्देश्य हिंदू समाज में सवर्ण हिंदुओं द्वारा अछूतों के साथ किए जानेवाले अन्यायपूर्ण दुर्व्यवहार का मूंह तोड़ना था।"[1] डॉ. अम्बेडकर जी ने दलितों को पिने के लिए पानी मिले इसलिए महाड़ के चवदार तालाब पर सत्याग्रह किया। इसका वर्णन महाकवि निमेश जी ने इस प्रकार किया है -

"सुनो सभी चवदार का, पानी पियहि तड़ाग।
सभी दलित आकार यहाँ, लै जलूस में भाग ॥"[2]

दलितों को नासिक के कालाराम मंदिर में प्रवेश दिलाने के लिए 'कालाराम मंदिर प्रवेश सत्याग्रह' किया। इस मंदिर प्रवेश का वर्णन महाकवि ने निम्नलिखित प्रकार से किया है -

"छुआ-छूत संघर्ष में, मंदिर करैं प्रवेश।
बाबासाहव आप ही, करो मार्ग निर्देश ॥"[3]

संविधान में दलितों के लिए संरक्षण की माँग की थी। तथा दलितों को सामान्य मनुष्य की तरह सुविधा प्राप्त हो जाए इसके लिए उन्होंने संघर्ष किया। इसका वर्णन निमेश जी इस प्रकार करते हैं -

"सार्वजनिक संस्थान खुलाओ। दलितों को सम्मान दिलाओं ॥
धर्म अरू शिक्षा नीति वनाओं। दलितनु पहले मुक्त कराओ ॥

---

[1]. डब्ल्यू.एन.कुबेर-भीमराव अम्बेडकर, पृ.21
[2]. रामदास निमेश - भीमकथाअमृतम्, पृ. 91
[3]. वही, पृ. 98

कुआँ, वावडी, ताल, तलैया | शूद्रों को नहीं नीर मुहैया ||

भोगें सव अधिकार समाना | ऊँच-नीच का भेद मिटाना ||"[1]

उपर्युक्त सभी विशेषताओं के आधार पर डॉ. अम्वेडकर जी के संघर्षशील व्यक्तित्व का रूप पाठकों के सामने आता है।

4.4.2.1.8 पत्रकार :

डॉ. अम्वेडकर जी ने 'वहिष्कृत भारत', 'समता', 'मूकनायक', 'जनता' और 'प्रवुद्ध भारत' नामक समाचार पत्र-पत्रिकाओं का निर्माण किया। इसके कारण उनकी पहचान एक अच्छे पत्रकार के रूप में हो गई थी। धनंजय कीर जी ने डॉ. अम्वेडकर जी के द्वारा निकाले पत्र-पत्रिकाओं के बारे में अपने विचार इस प्रकार प्रस्तुत किए है कि, "मूकनायक' में उन्होंने गूँगों की शिकायतें प्रस्तुत की। 'वहिष्कृत भारत' में उन्होंने बहिष्कृत भारत के दर्शन कराए। 'समता' में उन्होंने सामाजिक समता का आग्रह किया। 'जनता' उनके आंदोलन की चौथी अवस्था है।"[2] तथा उन्होंने 'वहिष्कृत भारत' पत्रिका के द्वारा दलितों को सलाह देने का कार्य किया। आलोचकों पर हमला करने के लिए 'बहिष्कृत भारत' पत्रिका का निर्माण किया। इसका वर्णन महाकवि ने इस प्रकार किया है -

"अखबारों ने धूम मचाई | बाबा की नित छपै बुराई ||

करने को प्रतिवाद निरंतर | 'बहिष्कृत भारत' पत्र छापकर ||"[3]

डॉ. विजया खंडाळे जी ने डॉ. अम्वेडकर की पत्रकारिता के बारे में कहा है कि, "डॉ. बावासाहव अम्वेडकर जी ने अपनी पत्रकारिता का उपयोग स्पृश्य और अस्पृश्यों के मन में समतावादी, वंधूतावादी, न्यायवादी, बुद्धिप्रामाण्यवादी, तर्कवादी और वैज्ञानिक विचारों के वीज बोने के लिए किया है।"[4] (डॉ. बावासाहेब आंबेडकरानी आपल्या पत्रकारितेचा उपयोग स्पृश्य व अस्पृश्य यांच्या मनात समतावादी, वंधुतावादी, न्यायवादी, बुद्धिप्रामाण्यवादी, तर्कवादी आणि विज्ञानवादी विचारांची वीजे रूजविण्यासाठी केला आहे.)

---

[1]. रामदास निमेश - भीमकथाअमृतम्, पृ. 96

[2]. धनंजय कीर - डॉ. बावासाहव आंवेडकर जीवन चरित, पृ.154

[3]. रामदास निमेश - भीमकथाअमृतम्, पृ. 106

[4]. डॉ. विजया खंडाळे - डॉ. बावासाहेव आंवेडकर पत्रकारिता : एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण, पृ.121

उपर्युक्त विशेषता के आधार पर कहा जा सकता है कि डॉ. अम्बेडकर जी को पत्रकार के रूप में सफलता प्राप्त हो चुकी है।

4.4.2.1.9 धम्मचक्र प्रवर्तक :

डॉ.अम्बेडकर जी ने धर्म परिवर्तन करने से पहले कुछ वर्ष पूर्व याने दि. 13 अक्तूबर, सन् 1935 ई. को कहा था कि, 'मैंने हिंदू धर्म में जन्म लिया है, लेकिन मैं हिंदू के रूप में नहीं मरूगाँ।' इस कथन को सत्य का रूप देते हुए उन्होंने दिनांक 14 अक्तूबर, सन् 1956 ई. को नागपुर में अपने सात लाख बंधुओं के साथ बौद्ध भिक्खु महास्थविर चंद्रमणी जी के द्वारा बौद्ध धर्म की दीक्षा ली। इसका वर्णन महाकवि निमेश जी ने इस प्रकार किया है -

"महास्थविर भिक्खु कहाई | उम्र तिरासी वर्ष बतायी ||
चन्द्रमणी सुनी नाम पुनीता | कुशिनारा से आये मीता ||
चीवर तन काषाय सजाये | चार भिक्खु संग मंत्र सुनाये ||
नतमस्तक पति पत्नी आये | पावन वेदी पर बैठाये||"[1]

इसप्रकार डॉ. अम्बेडकर जी ने बौद्ध धर्म की दीक्षा लेकर तथागत गौतम बुद्ध के धम्म को नया जीवन प्रदान किया। इसके कारण डॉ. अम्बेडकर जी को धम्मचक्र प्रवर्तक कहा जा सकता है।

4.4.2.1.10 नारी उद्धारक :

डॉ. अम्बेडकर जी ने नारी के बारे में अनेक प्रकार के विचार प्रस्तुत किए हैं। उनका कहना था कि नारी को पूरा स्वातंत्र्य मिलना चाहिए। तथा उसे समाज में सभी अधिकार प्राप्त होने चाहिए। लेकिन नारी को आज किसी भी प्रकार के अधिकार नहीं मिले हैं। उसका स्थान समाज में गौण है। इसका वर्णन महाकवि निमेश जी ने इस प्रकार किया है।

"नारी आज पाँव की जूती | वाज रही पुरूषों की तूती ||
नारी का शोषण होता है | देखि हृदय को दुख होता है ||

---

[1]. रामदास निमेश - भीमकथाअमृतम्, पृ. 386

हिंदू जन विष वेल वतायें | धर्मग्रन्थ सदियों से गाये ||

विन त्रुटि नारी पीटी जाये | पुन: पुरूष की दास कहायें ||

पुरूष प्रधान समाज वनाया | नारी का अपमान सवाया ||"[1]

नारी की इस स्थिति के कारण डॉ. अम्वेडकर जी ने भारतीय संविधान में स्त्री-पुरूष समानता की जानकारी का वर्णन किया है। उन्होंने नारी का उद्धार हो इसलिए शिक्षा और विवाह आदि बातों की ओर ध्यान दिया है। इसका वर्णन महाकवि ने इस प्रकार किया है।

"नारी वर्ग समर्थन किया | भीमराव उध्दारक चीना ||

बूढ़े संग बाला बंध जाये | असमय विधवा यौवन जाये ||

उपजै विकृति समाज हमारी | होय तिरस्कृत केवल नारी ||

विधवा ब्याह व्यवस्था होई | व्याभिचारी तव लोग न होई।

सामाजिक बदलाव की, आज जरूरत मीत |

नारीकुल शिक्षित बने, विकसे ज्ञान पुनीत ||"[2]

उपर्युक्त सारी जानकारी के आधार पर हम डॉ. अम्वेडकर जी को नारी उद्धारक के रूप में पहचान सकते हैं।

4.4.2.1.11 भारतीय संविधान के निर्माणकर्ता या शिल्पी :

डॉ. अम्वेडकर जी को समस्त विश्व भारत देश के संविधान के निर्माणकर्ता के रूप में पहचानता हैं। भारत देश के संविधान के निर्माण में उनका योगदान महत्त्वपूर्ण माना जाता है। इस संविधान के निर्माण के लिए डॉ.अम्वेडकर जी को दो साल ग्यारह महिने और सत्रह दिन लगे थे। उनके द्वारा लिखे संविधान में स्वातंत्र्य, समता, वंधुता, और न्याय इन मानवीय मूल्यों का विशेष रूप से ध्यान दिया है। इस प्रकार के संविधान के कारण भारत देश का स्थान विश्व में महत्त्वपूर्ण माना जाता है। महाकवि ने डॉ. अम्वेडकर जी के द्वारा निर्माण किए संविधान का वर्णन इस प्रकार किया है -

---

[1]. रामदास निमेश - भीमकथाअमृतमत्र, पृ. **327**

[2]. वही, पृ. **327**

"रचि विधान अनुपम प्रारूपा | जनता द्वारा गया निरूपा ||

चार नवम्बर अडतालीसा | किया पेश शुचि विधि वागीशा ||

संविधान प्रारूप सदन में | नव विधान अपनाय वतन में ||

पन्द्रह और तीन सौ धारा | भिन्न वर्ग, विधि न्याय विचारा ||"[1]

तथा

"उन्नत देशों की विधा, संविधान अवलोकि |

उत्तम तत्त्व निकाल कर, रचि विधान विलोकि ||"[2]

डॉ. अम्बेडकर जी के द्वारा निर्माण की संविधान पर गोंविद वल्लभ जी ने अपना मत प्रस्तुत करते हुए कहा है कि, "संविधान का प्रारूप तैयार करने में और उसकी व्यवस्थाओं की सदन में व्याख्या करने से उनकी (अम्बेडकर) विद्वत्ता का परिचय मिलता है।"[3] इन सारी बातों के आधार पर कहा जा सकता है कि भारत देश के संविधान के निर्माणकर्ता या मुख्य शिल्पी के रूप में डॉ. अम्बेडकर जी का स्थान महत्त्वपूर्ण माना जाता है।

4.4.2.1.12 कैबिनेट मंत्री :

अंग्रेजों के द्वारा भारत के स्वतंत्रता के विधायक को मान्यता मिलने के बाद मंत्रिमंड़ल के सदस्यों की घोषणा की। इनमें डॉ. अम्बेडकर जी को कानून मंत्री का पद दिया गया। इसका वर्णन महाकवि ने इस प्रकार किया है -

"विधिमंत्री गये भीम बनाये | सकल देश में आनंद छाये ||

एक मसौदा समिती वनाई | उन्तीस अगस्त दिवस बतलाई ||

लिखे मसौदा संविधान का | अपने इस भारत महान का ||

वावा जू अध्यक्ष बनाये | सादुल्ला माधव बुलवाये ||"[4]

इस तरह डॉ. अम्बेडकर जी को केंद्रीय मंत्रिमंड़ल में उनकी विद्वत्ता, पांडित्य और तर्क शक्ति के आधारपर कानून मंत्री पद दिया गया और उन्हें कैबिनेट मंत्री के रूप में

---

[1]. रामदास निमेश - भीमकथाअमृतम्, पृ.321

[2]. वही, पृ. 321

[3]. डब्लू. एन. कुवेर - भीमराव अम्बेडकर, पृ. 89

[4]. रामदास निमेश - भीमकथाअमृतम्, पृ.305

मंत्रिमंड़ल में शामिल किया गया।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि, डॉ. अम्बेडकर जी का व्यक्तित्व पांडित्यता से परिपूर्ण था। इसके साथ उनके व्यक्तित्व के अनेक रूप जैसे अर्थतज्ञ, शिक्षाविद, समाजक्रांतिकारक, नारी उद्धारक, साहित्यिक विचारतज्ञ, कैबिनेट मंत्री आदि रूपों का पता हमें चलता हैं। व्यक्तित्व के इन पहलुओं के आधार पर महाकवि निमेश जी ने डॉ. अम्बेडकर जी को 'भीमकथाअमृतम्' महाकाव्य के महानायक के रूप में प्रस्तुत किया है।

महाकवि निमेश जी ने विवेच्य महाकाव्य में डॉ. अम्बेडकर जी के अतिरिक्त अन्य पात्रों का वर्णन किया है। इन पात्रों में से कुछ प्रमुख पात्रों का चरित्र-चित्रण निम्नलिखित प्रकार से करते है -

4.4.2.2 रमाबाई :

रमाबाई विवेच्य महाकाव्य की नायिका है। वह महाकाव्य के नायक डॉ. अम्बेडकर जी की पत्नी है। इनकी शादी नौ वर्ष की आयु में हुई थी। वह दाभोल के समीप स्थित वनंद गाँव के निवासी भिकू धोत्रे जी की पुत्री थी। रमाबाई कर्तव्यनिष्ठ, स्वसुखत्यागी, भीतर ही भीतर जलकर आत्मयज्ञ करनेवाली औरत थी। महाकवि ने विवेच्य महाकाव्य में रमाबाई का वर्णन इस प्रकार किया है -

"घोर हताश में वह मुझको, धीरज् परम् बंधाती थी।
अति अभाव में हमें खिलाकर, भूखी खुद सो जाती थी।
मेरी प्रिया हृदय सम्राज्ञी, व्यवहार कुशल कहलाती थी।
अपढ़ विवेकी नारी, सुन्दरी आगे मुझे बढ़ाती थी।
परम योगिनी, धरम धारिणी, निस्पृह नारी कहाती थी।
परम हृदय की गहराई से, गूढ़ प्रेम दरशाती थी।"[1]

वह अपने पति की सफलता तथा दीर्घायुष्य के लिए व्रतवैकल्य और ईश्वर की उपासना करती थी। वह स्वभाव से शांत, शरीर से कमजोर, सुव्रतचारिणी, बर्ताव में गंभीर,

---

[1]. रामदास निमेश - भीमकथाअमृतम्, पृ. 211

वोलने में विनयशील, गृहस्थी में व्यवहारदक्ष और सहानुभूति से युक्त थी। वह अपने पति के सुख में ही अपना सुख ढुँढ़ती थी। उनकी मृत्यु दि. 27 मई, सन् 1935 ई. को हुई। इनकी मृत्यु के कारण महाकाव्य के नायक डॉ. अम्वेडकर जी को गहरा सदमा पहुँचा।

4.4.2.3 रामजी संकपाल :

रामजी संकपाल महाकाव्य के नायक डॉ. अम्वेडकर जी के पिता थे। वे उद्यमी, महत्त्वाकांक्षी और स्वतंत्र वृत्ति के व्यक्ति थे। रामजी क्रिकेट, फुटबॉल इस खेलों में प्रवीण थे। वे सेना में फौजी थे। तथा बाद में फौजी छावणी के स्कूल के प्रधान अध्यापक बने। चौदह साल तक कार्य करने के बाद वे सूबेदार मेजर बने। सेना से अवकाश प्राप्त हो जाने के बाद सतारा में आकर रहने लगे। तथा बीमारी के कारण फरवरी, सन् 1913 ई. को उनकी मृत्यु हो गई।

4.4.2.4 भीमाबाई :

भीमाबाई महाकाव्य के नायक की माता थी। वह धर्माजी मुरबाडकर की बेटी थी। तेरह साल की उम्र में उनका विवाह रामजी से हुआ। वह बड़ी मानी, हठिली और धर्मपरायण औरत थी। उसका वर्ण गोरा था, आँखे बड़ी और पानीदार, बाल घुँघरालें, माथा चौड़ा और नाक थोड़ी छोटी थी। वह व्यवहार कुशल थी। जब नायक छह वर्ष के थे तभी भीमाबाई का सतारा में देहान्त हो गया था।

4.4.2.5 शारदा / सविता कबीर :

दि. 15 अप्रैल को इनका महाकाव्य के महानायक डॉ. अम्वेडकर के साथ विवाह हुआ था। इनका विवाहपूर्व नाम डॉ.शारदा कबीर था। वह एक कायस्थ ब्राह्मण थी। तथा नायक के साथ विवाह हो जाने के बाद उनका नाम सविता अम्वेडकर हो गया। इन्होंने डॉ. अम्वेडकर की बीमारी में सेवा सुश्रुषा की।

4.4.2.6 कृष्णाजी अर्जुन केलुसकर :

ये मुंबई के एक विख्यात विचारक, प्रसिद्ध अध्यापक, मशहूर ग्रंथकार तथा निष्ठावान समाज सुधारक थे। महानायक डॉ. अम्वेडकर जी मैट्रिक पास होने के वाद एक

सभा में इन्होंने अपना मराठी भाषा में लिखा ग्रंथ 'बुद्ध चरित्र' उपहार रूप में दिया था।

उपर्युक्त पात्रों के सिवा महाकवि निमेश जी ने आलोच्य महाकाव्य में यशवंतराव, आनंद, मीरा, बलराम, मुंजुला, तुलसीवाई, महाराजा सयाजीराव गायकवाड, जयकर, तिलक, चंदावरकर, महात्मा गांधी, बी.सी.काम्बले, शिवराम जानवा काम्बले, सैलिग्मन, म.ज्योतिबा फुले, छत्रपति शाहू महाराजा, नानकचंद रत्तू आदि अनेक गौण पात्रों का वर्णन किया है। इन पात्रों के माध्यम से महाकवि को महानायक डॉ. अम्बेडकर जी के चरित्र का चित्रण करने में सफलता प्राप्त हुई है।

4.4.3 रस :

आ. भरतमुनि जी ने 'नाट्यशास्त्र' ग्रंथ में रस से संबंधित विचार प्रस्तुत करते हुए कहा है कि, "विभावानुभाव व्यभिचारिसंयोगद्रस निष्पत्ति:।"[1] इसका अर्थ है - विभाव, अनुभाव और व्यभिचारी भावों के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है। महाकवि रामदास निमेश जी द्वारा लिखित 'भीमकथाअमृतम्' महाकाव्य में रसों का वर्णन इस प्रकार प्रस्तुत किया जा रहा है।

4.4.3.1 वीर रस :

वीर रस का स्थायी भाव उत्साह है। वीर रस में मुख्यत: दीनों की दशा, धर्म की दुर्दशा आदि को मिटाने के लिए नायक जो कार्य करता है, उसमें वह पुरूषार्थ दिखाकर, उत्साह के साथ करता है। इसका वर्णन कवि वीर रस के आधार पर प्रस्तुत करता है। आलोच्य महाकाव्य में महाकवि ने डॉ. अम्बेडकर जी के द्वारा किए कार्यों का वर्णन किया है। इसमें से 'महाड तालाव सत्याग्रह' का वर्णन महाकवि ने इस प्रकार किया है -

"पाँच मील की दूरी तय कर | ले जलूस में आये चलकर ||
पंद्रह सहस का जन समूह था | हिन्दू जलधि का चक्रव्यूह सा ||
पाँच सहस्त्र छंटे दृढ़ योध्दा | सत्याग्रह निज नाम सुबोधा ||
लखि स्थिति गम्भीर महत्तम | दलितों का दृढ़ सत्य समागम ||"[2]

---

[1]. कृष्णकुमार गोस्वामी - काव्यशास्त्र मार्गदर्शन, पृ. 20
[2]. रामदास निमेश - भीमकथाअमृतम्, पृ. 93

कालाराम मंदिर प्रवेश सत्याग्रह के समय हुई लड़ाई के बाद महाकवि ने डॉ. अम्बेडकर जी को एक वीर पुरूष के रूप में प्रस्तुत किया है।

"ऐसी दुर्गति उचित क्या, प्राण बचाऊँ भागि।
क्या मैं कायर पुत्र हूँ, हूँ सैनिक का लाल ॥"[1]

इसके आधार पर कहा जा सकता है कि महाकवि ने विवेच्य महाकाव्य में डॉ. अम्बेडकर जी को एक वीर पुरूष के रूप में वर्णित किया है।

4.4.3.2 करूण रस :

करूण रस का स्थायी भाव शोक है। इस रस का संचारी भाव चिंता, ग्लानि, विषाद, दु:ख, मरण, घृणा और निर्वेद आदि माने गए हैं। महाकवि निमेश जी ने विवेच्य महाकाव्य में महानायक के पिता की मृत्यु के बाद जो वर्णन किया है उसमें करूण रस का निर्माण हुआ है। वह इस प्रकार है -

"प्राणहीन तात तन देखा | भीमराव दु:ख का नहीं लेखा ॥
मारी चीख पुत्र सर पटका | लगा हृदय पर दुख का झटका ॥
पिता शोक में सुधि बुध्दि खोई | हित चिन्तक दीखै नहीं कोई ॥
स्वजन मित्र सब हत-प्रभ होवै | हालत देखि भीम की रौवे ॥"[2]

साथ ही महाकवि ने महाकाव्य में तथागत गौतम बुद्ध का उदाहरण दिया है उसमें करूण रस का वर्णन हुआ है। जैसे -

"हंस देखि, सिध्दारथ, अति घायल | लहू श्राव, पीड़ित हत सम्बल ॥
उपजी व्यथा हृदय के अन्दर | काढ़ि तीर मारा भुज अन्दर ॥"[3]

महाकवि ने अम्बेडकर जी की पत्नी की मृत्यु के बाद उनको हुए पत्नी शोक का वर्णन इस प्रकार किया है -

"भीमराव सा योगी ज्ञानी | नारी वियोग महादुख जानी ॥

---

[1]. रामदास निमेश - भीमकथाअमृतम, पृ. 101
[2]. वही, पृ. 41
[3]. वही, पृ. 85

हो निस्तब्ध मूक मुनि बैठा | दुख सागर में गहरे पैठा ||

हप्ता, दस दिन रह एकाकी | जगजीवन के चिन्ह न वाकी ||

तन पहने वैरागी चोला | उमा वियोगी शंकर भोला ||

बुझा हुआ चेहरा दिखे, नयना गेरू लाल |

योगी से गंभीर अति, वाबा शोक निठाल ||"[1]

तथा डॉ. अम्बेडकर जी के निर्वाण के बाद का वर्णन महाकवि ने इस प्रकार किया है -

"लगी चिता में आग जव, चीखे कण्ठ अनेक |

क्रदन करूण कठोर सुन, हुआ दुखद अतिरेक ||"[2]

इस प्रकार विवेच्य महाकाव्य में करूण रस का वर्णन मिलता है।

4.4.3.3 शृंगार रस :

शृंगार रस के संयोग और वियोग यह दो भेद होते हैं। वियोग शृंगार की पूर्वराग, मान, प्रवास आदि स्थितियाँ होती हैं। आलोच्य महाकाव्य में महाकवि ने प्रवास इस स्थिति का वर्णन किया है। विवेच्य महाकाव्य में अम्वेडकर लन्दन जाते समय उनकी पत्नी की वियोग दशा का वर्णन इस प्रकार मिलता है -

"सबके मन उत्साह घनेरा | मिटा भीम मन अमिट अंधेरा ||

रामू के हिय सुख दु:ख भरी | पति वियोग की व्यथा अगारी ||

होय मनोरथ सफल पिया का | इससे हर्षित हृदय पिया का ||"[3]

महानायक लन्दन जाते समय उनकी पत्नी उनको रोते हुए विदा करती है। इसका वर्णन महाकवि ने इस प्रकार किया है -

"भरि नयनों में नीर प्रिया अति,

पति को लन्दन करै रवाना

---

[1]. रामदास निमेश - भीम्कथाअमृतम्, पृ. 211-212

[2]. वही, पृ. 410

[3]. वही, पृ. 64

तुम विन राज विश्व का मुझको,

सभी रत्न धन धूलि समाना ॥"[1]

इसप्रकार विवेच्य महाकाव्य में शृंगार रस का वर्णन मिलता है।

4.4.3.4 वात्सल्य रस :

प्रस्तुत रस का स्थायी भाव पुत्र स्नेह है। महाकवि ने आलोच्य महाकाव्य में डॉ. अम्बेडकर जी के हृदय में अपने पुत्र के प्रति प्रेम और स्नेह का वर्णन इस प्रकार किया है -

"कुछ ही काल के अन्तराल से राजरत्न प्यारा प्यारा।

भीमराव का अति प्रिय बेटा माँ की आखों का तारा ॥

सुत था या कि छलावा कोई मोहक मुखड था प्यारा।

चंचल चपल खिलौना गोरा, राजरत्न था राज दुलारा ॥"[2]

इसप्रकार विवेच्य महाकाव्य में महाकवि ने वात्सल्य रस का वर्णन किया है।

4.4.3.5 रौद्र रस :

रौद्र रस का स्थायी भाव क्रोध है। महाकवि ने विवेच्य महाकाव्य में डॉ. अम्बेडकर जी के द्वारा एक सभा में दलितों को अमानवीय कार्यों को छोड़ने को कहा था। उस बात का वर्णन महाकवि ने इस प्रकार किया है।

"विप्लव कारी बन गया, शमा देश के बीच।

सत्याग्रह संघर्ष जल, आजादी जड़ सींच ॥

आजादी जड़ सींच, चतुर्दिक मारा मारी।

आजादी का बिगुल, वज उठा ताण्डव कारी ॥"[3]

तथा भारत देश को आजादी दिलाने के लिए देश के अनेक क्रांतिकारियों द्वारा किए गए कार्यों का वर्णन महाकवि ने इस प्रकार किया है। जैसे -

"भगतसिंह आजाद वनाई। राजगुरू सुखदेव मिलाई ॥

---

[1]. रामदास निमेश - भीमकथाअमृतम्, पृ. 68

[2]. वही, पृ. 95

[3]. रामदास निमेश - भीमकथाअमृतम्, पृ. 120

क्रांति पार्टी विप्लव-कारी | अंगरेजों की दशा विगारी ||

छुत अछूत युवक जन टोली | प्राण फूंककर खेलहि होली ||

अंगरेजों की खूनी सेना | अत्याचार करे चूके ना ||"[1]

इस प्रकार महाकवि ने रौद्र रस का वर्णन किया है।

उपर्युक्त समस्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि महाकवि द्वारा लिखित विवेच्य महाकाव्य में वीर, करूण, शृंगार, रौद्र और वात्सल्य आदि रसों का वर्णन मिलता है।

4.4.4 छंद :

कविता या काव्य को छंदों के आधार पर ही बद्ध किया जाता है। छंद के माध्यम से काव्य को एक निश्चित गति प्रदान करने का काम किया जाता है। महाकवि निमेश जी ने भी विवेच्य महाकाव्य में विभिन्न छंदो का प्रयोग किया है। इसका विवेचन-विश्लेषण हम निम्नलिखित प्रकार से करते हैं।

4.4.4.1 दोहा :

दोहा यह एक मात्रिक छंद है। "इसके प्रथम और तृतीय चरण में तेरह मात्राएँ होती है। तथा द्वितीय और चतुर्थ चरण में ग्यारह मात्राएँ होती है। दूसरी और चौथी पंक्ति के अंत में तुक साम्य होता है। और अंतिम अक्षर लघु होता है।"[2] दोहा छंद का प्रयोग महाकवि ने रामजी की अम्बेडकर को पढ़ाने की इच्छा व्यक्त करते समय इस प्रकार किया है।

"कठिन समस्या अर्थ की, खड़ी सामने आय |

दृढ़ इच्छा मेरी यही, पढ़ै भीम अधिकाय ||"[3]

इसके साथ ही चुनाव में दलितों को आरक्षण दिलाने संबंधी पक्ष का वर्णन इस प्रकार किया है। जैसे -

"आरक्षण दे दलित को, हौं संयुक्त चुनाव |

---

[1]. रामदास निमेश - भीमकथाअमृतम्, पृ. 278

[2]. कृष्णकुमार गोस्वामी - काव्यशास्त्र मार्गदर्शन, पृ. 246

[3]. रामदास निमेश - भीम्कथाअमृतम्, पृ. 29

करै प्रमाणित गर्वनर, लड़े अछूत चुनाव ॥"[1]

अंहिसा संबंधी विचार इस प्रकार प्रकट किए हैं -

"प्राणि मात्र के कष्ट का, करे निवारण मीत ।
वही अहिन्सा श्रेष्ठ है, बरसाये जल प्रीति ॥"[2]

तथा मराठवाडा की जमीन दलितों को देने की बात का वर्णन इस प्रकार मिलता है -

"मराठवाडा खण्ड़ में, परती है जो भूमि ।
दलित वर्ग को दीजिए, सोना उगले भूमि ॥"[3]

इस प्रकार महाकवि निमेश जी के द्वारा लिखित विवेच्य महाकाव्य में दोहा इस मात्रिक छंद का वर्णन मिलता है।

4.4.4.2 चौपाई :

यह मात्रिक छंद है। "इसके प्रत्येक चरण में सोलह मात्राएँ होती है।"[4] तथा प्रत्येक छंद के अंत में यति होती है। इस छंद का वर्णन विवेच्य महाकाव्य में महाकवि ने डॉ. अम्बेडकर जी के पिता का वर्णन करते हुए इस प्रकार किया है -

"सूबेदार अछूत रामजी, मालोजी थे पुरूष महान ।
संकट में भी व्रत नहीं तोडा, सतत् चलाया था अभियान ॥
माता पिता मित्र गुरू, सेवक बनकर पाला पुत्रों को ।
धीर व्रती ने भूखा रहकर, भी नहीं सताया मित्रों को ॥"[5]

प्रथम गोलमेज सम्मेलन में आने के लिए भेजे गए पत्र के वर्णन में चौपाई इस छंद का प्रयोग महाकवि ने इस प्रकार किया है -

"श्रीमान अकबर, रामास्वामी । श्रीमान मिर्जा पैट्रोनामी ॥
जाधव भाष्कर्राव विज्ञजन । राव बहादूर श्रीनिवासन ॥

---

[1]. रामदास निमेश - भीमकथाअमृतम्, पृ. 122
[2]. वही, पृ. 249
[3]. वही, पृ. 352
[4]. कृष्णकुमार गोस्वामी - काव्यशास्त्र - मार्गदर्शन, पृ. 246
[5]. रामदास निमेश - भीमकथाअमृतम्, पृ. 41

वावा भीमराव अम्बेडकर | सवको पाती दी भिजवाकर ||

सुनहु सितम्वर छ: सनतीसा | मिले भीम को विश्वावीसा ||"[1]

तथा

"सदियों से भोगे हम सवने,

वह पाप क्या भाग्य हमारे |

अगर नहीं तो भ्रात हमारे,

जुँआ गुलामी शीघ्र उतारें ||"[2]

नारी के बंधन को मुक्त करने की व्यवस्था का वर्णन महाकवि ने इस प्रकार किया है -

"यदि मैं साथ तुम्हारा पाऊँ | उत्तम मैं कानून बनाऊ ||

नारी के वन्धन सब काटूँ | दोनों हाथ सभी हक बाटूँ ||

वृथा लोग अपवाद उड़ायें | करि निन्दा उपहास उड़ायें ||

वे जन जग में अधम कहायें | सुखमय जीवन दुखी बनायें ||"[3]

इस प्रकार महाकवि ने विवेच्य महाकाव्य में चौपाई इस छंद का वर्णन किया है।

4.4.4.3 तुकांत :

तुकांत यह छंद-विधान की एक शैली है। तुकांत इस छंद में कविता की पहली पंक्ति के अंतिम वर्ण अथवा मात्राओं की आवृत्ति क्रम से अन्य पंक्तियों के अंत में होती है। इस तुक के कारण ही कविता या काव्य में संगीतात्मकता निर्माण हो जाती है। महाकवि ने अम्वेडकर जी विदेश से पढ़ाई खत्म करके वापस आने का वर्णन इस प्रकार किया है। जैसे -

"सन सत्रह इक्कीस अगस्त को,

निज स्वदेश की धरती परसी |

वम्वई नगर स्वजन हर्षाये,

---

[1]. रामदास निमेश-भीमकथाअमृतम्, पृ. 125

[2]. वही, पृ.228

[3]. वही, पृ. 317

रामीवाई मन ही मन हरषी ॥

दीर्घकाल प्रवास पति का,

पिया मिलन को थी अति तरसी ।

तन मन से पुलकित पति प्रीता,

मुग्ध मगन थी हरषी हरषी ॥"[1]

तथा

"करै कर्म की पूजा निश दिन, भाग्यवान को ठुकराये ।

त्यागै मदिरा-मांस अपावन, दुराचार से घबराये ॥

माँ भगिनी पर-नारी जाने, पुण्य कर्म ये बतलाये ।

हिंसा झूठ सदाँ ही त्यागे, सदाँ तमस को बिसराये ॥"[2]

तथा अनुसूचित जाति के लोगों के द्वारा किए आंदोलन का वर्णन महाकवि ने इस प्रकार किया है। जैसे -

"अनुसूचित जाति प्रदर्शन करके, आन्दोलन आरम्भ किया।

ऑल इण्ड़िया कॉगरेस पण्ड़ाल, बम्बई में जा घेर लिया ॥

काले झण्ड़े दिखा संघ ने निज, अधिकारों का इजहार किया ।

स्वतंत्र भारत में दलितों के हित में, कौन विचार किया ।"[3]

इस प्रकार महाकवि ने प्रस्तुत महाकाव्य में तुकांत इस छंद का वर्णन किया है। उपर्युक्त सारी जानकारी के आधार पर कहा जा सकता ही कि, महाकवि निमेश जी ने विवेच्य महाकाव्य में दोहा, चौपाई और तुकांत आदि छंदों का वर्णन सफलता से किया है।

4.4.5 वर्णन :

महाकाव्य में वस्तु वर्णन और रूप वर्णन आदि प्रकार मिलते हैं। वस्तु वर्णन में कवि प्रकृति और ऋतु आदि विषय पर आधारित दृश्यों का वर्णन करते हैं। तथा रूप वर्णन

---

[1]. रामदास निमेश - भीमकथाअमृतम , पृ. 49

[2]. वही, पृ. 190

[3]. वही, पृ. 281

के अंतर्गत कवि काव्य के पात्रों तथा महानायक का वर्णन करते है। प्रकृति वर्णन में प्रकृति के विभिन्न दृश्यों का वर्णन कवि करता है। डॉ. वीणा शर्मा जी ने प्रकृति वर्णन के वारे में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा है कि, "कवि मानस प्रकृति के क्षण-क्षण परिवर्तित रूपों को कई प्रकार से चित्रित करता रहा है। कभी वह प्रकृति के अनुपमेय सौंदर्य का अवलोकन करता है और वह सौंदर्य उसकी संपूर्ण चेतना को अपने पाश में आबद्ध कर लेता है।"[1] अत: हम विवेच्य महाकाव्य में रूप वर्णन तथा वस्तु वर्णन के बारे में वर्णित जानकारी को निम्नलिखित प्रकार से देखते हैं।

4.4.5.1 रूप वर्णन :

रूप वर्णन के अंतर्गत महाकवि ने महाकाव्य के नायक का तथा अन्य पात्रों का वर्णन किया है। इसमें महाकवि निमेश जी ने डॉ. अम्बेडकर जी के बाल रूप का वर्णन इस प्रकार से किया है -

"लख लख सुन्दर छवि बालक की माता होती बलिहारी।
झट चूमै झट हृदय लगावै, प्रेम पगी माता प्यारी॥
काला टीका लगा भाल पर, प्रतिदिन माँ ने दीठि उतारी॥
तोरी गा गा थपकी दे दे, जब तब कहती निंदिया आरी॥"[2]

तथा

"सुंदर स्वस्थ सुकोमल बालक, गौर वर्ण का अधिकारी।
आयत नयन मनोहर नासा, केश राशि प्यारी प्यारी।"[3]

इस प्रकार महाकवि ने डॉ. अम्बेडकर जी के रूप का वर्णन विवेच्य महाकाव्य में किया है।

4.4.5.2 वस्तु वर्णन :

वस्तु वर्णन के अंतर्गत महाकवि निमेश जी ने प्रकृति, ऋतु, नगर, सत्याग्रह, विवाह

---

[1]. डॉ. वीणा शर्मा - आधुनिक हिंदी महाकाव्य, पृ. 187
[2]. रामदास निमेश - भीमकथाअमृतम्, पृ. 18
[3]. वही, पृ. 18

आदि का वर्णन किया है। इसका विवेचन-विश्लेषण इस प्रकार से किया जा सकता है।

4.4.5.2.1 प्रकृति चित्रण :

विवेच्य महाकाव्य में महाकवि ने संवेदनात्मक रूप में, उद्दीपन रूप में तथा स्वतंत्र रूप में प्रकृति का चित्रण किया है। इसकी जानकारी हम निम्नलिखित प्रकार से देखते हैं।

4.4.5.2.1.1 संवेदनात्मक रूप में :

प्रकृति मानव की मन:स्थिति के अनुसार कभी दु:ख में दु:खी तथा सुख में प्रसन्न दिखाई देती है। विवेच्य महाकाव्य में महाकवि ने डॉ. अम्बेडकर जी के महापरिनिर्वाण के बाद का वर्णन संवेदनात्मक रूप में किया है। जैसे -

"बेसुध विश्व नींद में सोया | विश्व रत्न भारत माँ खोया ||
स्थिर जैसे समय पुकारे | कण कण जग का आज पुकारे ||
कहाँ गये युग पुरूष हमारे | करि युगान्त प्रिय कहाँ पधारे ||
किन्तु सृष्टि में शान्ति समाई | यह विड़म्बना कैसी भाई ||
हुआ महानिर्वाण गुरू का | युग निर्माता जगद गुरू का ||"[1]

4.4.5.2.1.2 उद्दीपन रूप में :

महाकवि निमेश जी ने विवेच्य महाकाव्य में उद्दीपन रूप में प्रकृति का वर्णन इस प्रकार किया है। जैसे -

"अति प्रमोद में रैन बिताई | धरती गगन मिले हर्षाई ||
अतिशय पुलकित भीमावाई | लगा संत वर अव सुखदाई ||
भोर पवन ने चुटकी काटी | और उषा ने लाली वाटी ||
बाल सूर्य की आभा न्यारी | खगकुल हर्षित सुषमा प्यारी ||
तपसिन भू ने प्यास बुझायी | निर्मल गगन लगे सुखदाई ||
तप्त धरा में सुप्त वीज कण | नव जीवन को उन्मुख इस क्षण ||"[2]

---

[1]. रामदास निमेश - भीमकथाअमृतम्, पृ. 405
[2]. वही, पृ. 17

4.4.5.2.1.3 स्वतंत्र रूप में :

विवेच्य महाकाव्य में प्रकृति का वर्णन कथा प्रसंग में आए स्थानों का परिचय देने के लिए किया है। महाकवि ने विवेच्य महाकाव्य के प्रथम स्कन्ध में 'भारत-वंदन' भाग में भारत देश का वर्णन स्वतंत्र रूप में किया है। जैसे -

"काश्मीरी केशर से सुरभित, कण-कण जिसका सुष्ठ मनोहर।
भाँति भाँति के कुसुम सर्वदा, हसते रहते है गुलमोहर ॥
निर्मल झील तड़ागों में, जल-क्रिडा करते ललित खग सुन्दर।
कोयल, मोर, पपीहा किलकिल, बिचरै हंसा मान-सरोवर ॥"[1]

इस प्रकार विवेच्य महाकाव्य में महाकवि ने संवेदनात्मक रूप में, उद्दीपन रूप में तथा स्वतंत्र रूप में प्रकृति चित्रण किया है।

4.4.5.2.2 ऋतु वर्णन :

विवेच्य महाकाव्य में महाकवि निमेश जी ने ऋतुओं का वर्णन निम्नलिखित प्रकार से किया है।

4.4.5.2.2.1 वसंत ऋतु :

वसंत ऋतु वर्णन में महाकवि निमेश जी की सूक्ष्म निरीक्षण क्षमता का परिचय मिलता है। उन्होंने भारत-वन्दन भाग में वसंत ऋतु का वर्णन इस प्रकार किया है -

"बारहौ मास बसंती वासा। मीठे फल शुचि सुमन निवासा ॥
झरना-झील का निर्मल पानी। तपैं यहा पर ऋषि मुनि ज्ञानी ॥
आदि-देव शंकर का वासा। गौरी संग जो करै निवासा ॥"[2]

तथा

"जनम दिवस की तिथि अब आई। वासंती शोभा संगलाई ॥
खिले कुसुम उद्यान सुहाने। खेत और खलियान दिवाने ॥
कोकिल मृदु संगीत सुनाये। भँवरा कलियों पर मंड़रायें ॥

---

[1]. रामदास निमेश - भीमकथाअमृतम्, पृ. 3
[2]. वही, पृ. 4

सखा चतुदिक फाग उड़ाये | युवक युवतियाँ होली गायें ॥"[1]

4.4.5.2.2.2 ग्रीष्म ऋतु :

ग्रीष्म ऋतु का वर्णन करते हुए कवि ने जेष्ठ महिने के तपमान के कारण निर्माण हुई स्थिति का वर्णन इस प्रकार किया है -

"जेठ मास में तपी धरा पर, जन जीवन था व्याकुल |
त्रण विहीन धरती पर, बनकर जलचर आकुल ॥
नीर बीना सर सरिता, तड़प रहे सारे मृग खगकुल |
माह आषाढ़ पवन पुरवाई, ले आई थी घन संकुल ॥"[2]

4.4.5.2.2.3 वर्षा ऋतु :

प्रस्तुत महाकाव्य में महाकवि ने वर्षा ऋतु का वर्णन अच्छी तरह से किया है। इस ऋतु का वर्णन महाकवि ने तिसरे सर्ग में इस प्रकार किया है। जैसे -

"शीतल समीर संजीवनि सी ढोलत चारों ओरा ॥
घन घमन्ड़ काले कजरारे, गर्जत है अति घोरा ॥
उमड़ि, उमड़ि बादल, मतवारे बरसहिं चहु ओरा ॥
भरि आनन्द पपीहा बोले, नचै चतुदिश वन में मोरा ॥"[3]

तथा

"मास जुलाई शुक्ल पक्ष था, वादल घिर घिर आए |
कही दामिनी तड़क तड़क कर, नारी हृदय चौंका जाए ॥
रिम-झिम रिम-झिम वर्षा वैरिन कामिन काम जगाए |
युवक युवतियाँ मत्त मदन-वश घर घर झूमे गाए ॥"[4]

---

[1]. रामदास निमेश - भीमकथाअमृतम्, पृ. 328
[2]. वही, पृ. 63
[3]. वही, पृ. 63
[4]. वही, पृ. 16

4.4.5.2.2.4 हेमंत ऋतु :

महाकवि निमेश जी ने हेमंत ऋतु का वर्णन करते हुए चंद्र के रूप का तथा शीतल सुरभित पवन का वर्णन इस प्रकार किया है। जैसे -

"पूर्ण चन्द्रमा खिला हुआ था, छिटकी थी उजियाली।
श्वेत-श्याम घन छाये, नभ में छाई छटा निराली ॥
शीतल सुरक्षित पवन भर रहा जीवन मधु की प्याली।
लता गुल्म तरू झूम रहे थे, बनी प्रकृति मतवाली ॥"[1]

इसप्रकार महाकवि ने विवेच्य महाकाव्य में वसंत, ग्रीष्म, वर्षा तथा हेमंत आदि ऋतुओं का वर्णन किया है।

4.4.5.2.3 नगर वर्णन :

आलोच्य महाकाव्य में महाकवि ने कथा प्रसंग के बीच-बीच में नगरों तथा शहरों का वर्णन किया है। प्रस्तुत महाकाव्य में भारत देश की भूमि का वर्णन इस प्रकार मिलता है -

"प्रस्तावित भारत की भूमि। गिरि, सागर, नदियों की भूमि ॥
संसाधन धरती पै सारे। खनिज पदार्थ कोयला कारे ॥
उपजाऊ ये भूमि कहाये। भारत को समृद्ध वनाये ॥"[2]

तथा महाकवि ने भारत देश की राजधानी दिल्ली का वर्णन इस प्रकार किया है-

"देव भूमि दिल्ली कहलाये। महाप्रभू रंग-रंग मनाये ॥
बड़े बड़े उद्यान वगीचे। पुष्प खिले वृक्षों के नीचे ॥
वृक्षवलि पग पग पर सोहे। झील तड़ाग सदाँ मन मोहे ॥
श्वेतांगी कमनीग कुमारी। करहि युवक संग क्रीड़ा प्यारी ॥
वायसरॉय भवन की महिमा। वैभव कला ज्ञान की गरिमा ॥
इण्ड़िया गेट वुलन्द कहाई। वलिदानों की कथा लिखाई ॥

---

[1]. रामदास निमेश - भीमकथाअमृतम्, पृ, 16
[2]. वही, पृ. 250

लाल किला इतिहास बताये | मुगल काल की गरिमा गाये ||

जामा मस्जिद चौक चाँदनी | निशि दिन गूँजे राग रागिनी ||"[1]

इसके साथ ही महाकवि ने कौंकण का वर्णन इस प्रकार से किया है -

"पश्चिम सागर तट पर कौंकण, भाग महा सुखदायी |

घनी शृंखला, पर्वतमाला, विटप घनेरे झरने बहते जीवनदायी ||

रत्नागिरि है इसी क्षेत्र में, जिसकी शोभा कही ना जायी |

नाना भांति फलों से पूरित वृक्ष, यहाँ पर सफल सुहायी ||"[2]

इस प्रकार महाकवि ने नगर वर्णन के अंतर्गत भारत देश की भूमि, दिल्ली और कौंकण का वर्णन किया है।

4.4.5.2.4 सत्याग्रह का वर्णन :

विवेच्य महाकाव्य में महाकवि ने डॉ.अम्बेडकर जी के द्वारा किए सत्याग्रहों का वर्णन किया है। इनमें उन्होंने अम्बेडकर जी के द्वारा किए 'महाड तालाब सत्याग्रह' का वर्णन इस प्रकार किया है -

"करि प्रतिकार पियें जल सारे | मेरे पीछे आओ सारे ||

बने अग्रणी भीमराव थे | सबके मन सम्मान भाव थे ||

ले जलूस चवदार पै आई | जन सागर सा पड़े लखाई ||

तृण तृण जोरि बनाया गट्ठर | शक्ति पुंज बन गया महत्तर ||

भीमराव हुंकार लगाई | जनता उमड़ि जोश भरिलाई ||

प्रथम पिया जल भीमराव ने | वहुरी पिया सब महानुभाव ने ||"[3]

तथा कालाराम मंदिर प्रवेश सत्याग्रह का वर्णन इस प्रकार किया है -

"दगा पीड़ित नासिक सारा | धर्म साम्य का गूंजे नारा ||

सत्याग्रह जारी रहा निरंतर | जब तक सफल हुआ ना सत्वर ||

---

[1]. वही, पृ. 256

[2]. रामदास निमेश - भीमकथाअमृतम्, पृ. 13

[3]. वही, पृ. 92

सब दगाई दिये जेल भर | कौपे भीम विधायिका अन्दर ||

दुख से मेरा फटता सीना | अत्याचार दलित पर किना ||"[1]

इस प्रकार महाकवि निमेश जी ने विवेच्य महाकाव्य में सत्याग्रहों का वर्णन किया है।

4.4.5.2.5 सभा का वर्णन :

महाकवि निमेश जी ने आलोच्य महाकाव्य में डॉ. अम्बेडकर जी के द्वारा ली गई सभाओं का वर्णन किया है। जैसे -

"चिटगाँव, जलगाँव, जगह जगह पर सभा नियोजित |

कहीं किसान मजदूर, कहीं पर होती रोज सभा आयोजित ||

भू, श्रम, शिक्षा पर बाबा जी करते रोज सभा सम्बोधित |

कहीं धरम की कटूता लेकर कहते घोर विरोध यथोचित ||"[2]

इस प्रकार महाकवि ने डॉ. अम्बेडकर के द्वारा ली गई सभाओं का वर्णन किया हैं।

4.4.5.2.6 विवाह का वर्णन :

प्रस्तुत महाकाव्य में महाकवि ने विवाह का वर्णन किया है। विवेच्य महाकाव्य में डॉ. अम्बेडकर जी के विवाह के प्रसंग का वर्णन इस प्रकार मिलता है-

"संकुल था शादी का स्थल, सभी खोलिया चहक उठी |

हर कोने में दोड़-धूप थी, वाल मण्ड़ली फड़क उठी ||

बजै वधाए, मंगल वेला, कोकिल कण्ठी कुहुक उठी |

बहन-भाभियाँ मंगल गाती, वृद्ध नारियाँ पुलक उठी ||"[3]

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि महाकवि निमेश जी ने विवेच्य महाकाव्य में वस्तुवर्णन, रूप वर्णन, प्रकृति चित्रण, ऋतु वर्णन तथा नगर वर्णन आदि बातों का वर्णन अच्छी तरह से किया हैं।

---

[1]. वही, पृ. 101

[2]. रामदास निमेश - भीमकथाअमृतम्, पृ. 119

[3]. वही, पृ. 32

4.4.6 भाषा-शैली :

4.4.6.1 भाषा :

भाषा विचारों एवं भावनाओं की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। काव्य का मूल तत्व ही भाषा है। कवि भाषा के माध्यम से अपने विचार पाठकों तक पहुँचाने का काम करते हैं। इसके कारण साहित्य में भाषा का स्थान महत्त्वपूर्ण माना जाता है। महाकवि निमेश जी ने विवेच्य महाकाव्य में खड़ी बोली हिंदी का तथा संत कबीर की सधुक्कड़ी भाषा का प्रयोग किया है। इसके साथ ही तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशी आदि भाषा के शब्दों का प्रयोग किया है। इसका विवेचन-विश्लेषण हम निम्नलिखित प्रकार से करते है।

4.4.6.1.1 तत्सम शब्द :

महाकवि निमेश जी ने प्रस्तुत महाकाव्य में तत्सम शब्दों का प्रयोग करके काव्य को रमणीयता और प्रवाहात्मकता प्रदान करने का काम किया है। महाकाव्य में प्रयुक्त तत्सम शब्दों के उदाहरण इस प्रकार हैं। जैसे -

सूर्य, पुत्र, धर्म, धर्मचक्र, ग्रंथ, कण्ठ, विवाह, रक्त, मृत्यु, कार्य, मन, कीर्ति, उपाधि, सांसद आदि।

4.4.6.1.2 तद्भव शब्द :

महाकवि ने प्रस्तुत महाकाव्य को सहज और सरल रूप प्रदान करने के लिए तद्भव शब्दों का प्रयोग किया है। वे शब्द इस प्रकार हैं -

रेल, पुस्तकालय, सूरज, किसान, गाँव, हृदय, पिता, लाल, आग, माता, हाथ, बहन, रात आदि।

4.4.6.1.3 देशज शब्द :

देशज शब्द का अर्थ जनता के बोलचाल के शब्द तथा लोकभाषा के शब्द है। पाठकों के मन में प्रस्तुत काव्य ग्रंथ पढ़ने की रूचि प्रदान करने के लिए महाकवि ने इन शब्दों का प्रयोग किया है। वे शब्द इस प्रकार के हैं। जैसे -

कमरा, महिला, पंड़ित, धोती, बीमार आदि।

4.4.6.1.4 विदेशी शब्द :

हिंदी भाषा में कुछ ऐसे विदेशी शव्द है, उन शव्दों का वैसा ही रूप हिंदी भाषा में अपनाया जाता है। इसमें अरवी, उर्दू, अंग्रेजी आदि भाषा के शव्द आते हैं। इन शव्दों का प्रयोग महाकवि निमेश जी ने विवेच्य महाकाव्य में सहज और स्वाभाविक ढंग से प्रस्तुत किया है। वे शव्द इस प्रकार के हैं।

4.4.6.1.4.1 अरबी शब्द :

महाकवि निमेश जी ने विवेच्य महाकाव्य में अरबी शव्दों का प्रयोग इस प्रकार किया हैं। जैसे -

किताब, मुकदमा, किस्मत, कानून, अदालत, नफरत, फरमाय आदि।

4.4.6.1.4.2 उर्दू शब्द :

महाकवि निमेश जी के विवेच्य महाकाव्य में उर्दू शब्दों का प्रयोग इस प्रकार द्रष्टव्य हैं। जैसे -

मंजिल, मुवक्किल, मुश्किल, नवाब, गिरफ्तार, जिहाद, जंजीर, हुकुम आदि।

4.4.6.1.4.3 अंग्रेजी शब्द :

रामदास निमेश जी के विवेच्य महाकाव्य में अंग्रेजी शव्दों का प्रयोग काफी मात्रा में दिखाई देता है। जिससे किसी प्रकार की बाधा उत्पन्न नहीं हुई है। वे शव्द इस प्रकार हैं -

कम्पनी, टैक्स, वेसिक, ऑक्सफोर्ड, एक्ट, लेफ्टीनेंट, लाइब्रेरी, डिग्री, स्कूल, रेजीमेंट, वैरिस्टर, म्यूजियम, थीसिस, ऑफिस, चेयरमैन, इंटरव्यू, केस, प्रोफेसर, इनक्वारी, मूवमेंट, टेलीफोन, कल्चर, प्रीमियर आदि।

4.4.6.1.5 संस्कृत शब्द :

विवेच्य महाकाव्य में अरवी, उर्दू, अंग्रेजी शव्दों के साथ-साथ संस्कृत भाषा के शव्द भी अधिकांश रूप में द्रष्टव्य हैं। जैसे -

सूर्य, मंदिर, अग्नि, मस्तक, शरीर, कण्ठ, ब्राह्मण, दुग्ध, हस्त आदि।

4.4.6.1.6 अपभ्रंश शब्द :

विवेच्य महाकाव्य में अपभ्रंश शब्दों का प्रयोग पर्याप्त मात्रा में मिलता है। जैसे- कीना, कुटुम, यतन, हिरदय, दीना, तुम्हरी, पूरन, तरक, धरम, कीन्हा, सम्हारो, लीन्ही, कीरति, वरणन, वसन आदि।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि महाकवि ने विवेच्य महाकाव्य में तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशी तथा संस्कृत भाषा के शब्दों का प्रयोग सार्थक रूप में किया है।

4.4.6.2 मुहावरे :

भाषा में स्वाभाविकता लाने के लिए कवि मुहावरों का प्रयोग करता है। जिससे रोचकता में वृद्धि होती है। महाकवि निमेश जी के विवेच्य महाकाव्य में प्रयुक्त मुहावरे इस प्रकार हैं। जैसे -

'गले का हार होना', 'मुँह बन्द कराया', 'तीखा बोलें', 'खुन नहाये' आदि।

अत: कहा जा सकता हैं कि निमेश जी ने विवेच्य महाकाव्य में मुहावरों का प्रयोग कर भाषा सौंदर्य की गरिमा प्रदान की है।

4.4.6.3 शैली :

शैली कवि पर पड़े संस्कारों के आधार पर बनती हैं तथा शैली में कवि की अभिव्यक्ति दिखाई देती है। प्रत्येक कवि की शैली में कुछ निजी विशेषताएँ होती हैं। शैली रूप, वर्ण, विषय, पात्र, परिस्थिति, उद्देश्य आदि के द्वारा निश्चित होती है। शैली का अनुकरण नहीं किया जा सकता। विवेच्य महाकाव्य में महाकवि ने वर्णनात्मक, मनोवैज्ञानिक, प्रश्नोत्तर, संवाद तथा सरल आदि शैलियों का प्रयोग किया है। इसका विवेचन-विश्लेषण हम निम्नलिखित प्रकार से कर सकते है।

4.4.6.3.1 वर्णनात्मक शैली :

प्रस्तुत शैली का स्थान काव्य में महत्त्वपूर्ण माना जाता है। महाकाव्य में जहाँ-कहीं कथानक, चरित्र चित्रण आदि बातों का वर्णन करते समय महाकवि ने प्रस्तुत शैली का प्रयोग किया है। जैसे -

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

"सुन्दर स्वस्थ सुकोमल बालक, गौर वर्ण का अधिकारी।
आयत नयन, मनोहर नासा, केश राशि प्यारी प्यारी ॥
क्षण मुस्काये रूंदन करे क्षण, क्षण में मारे किलकारी।
मां की कुटिया का आंगन था, हर्ष-भुवन का अधिकारी ॥"[1]

अत: कहा जा सकता है कि निमेश जी ने अम्बेडकर जी के बाल रूप का वर्णनात्मक शैली के द्वारा चित्रण किया है।

4.4.6.3.2 मनोवैज्ञानिक शैली :

प्रस्तुत शैली के भीतर कथानक का सूत्र मूलत: पात्रों की विविध मनस्थितियों के द्वारा निर्देशित होता है। विवेच्य महाकाव्य में माता की मृत्यु के बाद अम्बेडकर जी की मानसिक स्थिती का चित्रण महाकवि ने प्रस्तुत शैली के द्वारा किया है। जैसे -

"निशि दिन याद करै माता को नयनन नीर बहावै।
एक डगर से डगर दुसरी मैया की खोज लगावै ॥
जहँ तहँ मा की सखी सहेली कातर हो बतलावे।
कभी अकेले बैठा बालक रोवे कुछ नहीं खावै ॥"[2]

अत: कहा जा सकता है कि निमेश जी ने अम्बेडकर जी की मानसिक स्थिति का वर्णन मनोवैज्ञानिक शैली द्वारा प्रस्तुत किया है।

4.4.6.3.3 प्रश्नोत्तर शैली :

प्रस्तुत शैली का प्रयोग रचनाकार अपनी रचना में सवाल और जवाब रूप में करता है। विवेच्य महाकाव्य में महाकवि ने प्रश्नोत्तर शैली का प्रयोग इस प्रकार किया है। जैसे -

"कठिन परिश्रम करि पढ़ता था। नहीं किसी से वह डरता था ॥
वामन शिक्षक चिढ़कर बोला। तू 'महार' है रे अति भोला ॥
शिक्षा पा क्या करना तुझको ? तेरा काम पढ़ाना मुझको ॥

---

[1]. रामदास निमेश - भीमकथाअमृतम्, पृ. 18
[2]. वही, पृ. 21

दुष्ट विप्र तू कौन है मेरा ? हित चिंतक जो बने घनेरा ॥

और प्रश्न मत आगे करना | उगलै रक्त नाक तव, बरना ॥

फिर भी तू यदि करै ढिगई | तेरी मैं अति करूँ पिटाई ॥"[1]

अत: कहा जा सकता हैं कि ब्राह्मण शिक्षक और अम्बेडकर के संवाद को महाकवि ने प्रश्नोत्तर शैली द्वारा प्रस्तुत किया है।

4.4.6.3.4 सरल शैली :

सरल शैली के आधार पर कवि अपने काव्य में सरल भाषा, भाव, रस, प्रसाद गुण आदि का वर्णन करता है। सरल शैली का प्रयोग महाकवि ने विवेच्य महाकाव्य में इस प्रकार किया है। जैसे -

"इस जीवन की कर्म भूमि में,

निर्बाध कर्म करते हैं जो जन |

वही सफल हो विजय होते,

कुचल सभी बाधाए दृढ़ बन ॥"[2]

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि विवेच्य महाकाव्य में महाकवि ने सरल शैली का प्रयोग पर्याप्त मात्रा में किया है।

4.4.6.3.5 संवाद शैली :

कवि पात्रों के भावों की अभिव्यक्ति काव्य में संवाद शैली के माध्यम से प्रस्तुत करता है। इस शैली को कथोपकथन शैली भी कहा जाता है। यह शैली काव्य में नाटकीयता प्रदान करने का काम करती है। विवेच्य महाकाव्य में महाकवि ने संवाद शैली का प्रयोग इस प्रकार किया है। जैसे -

"अम्बेडकर इक बात बताओ | हमको प्रिय खुलकर समझाओ ॥

मिल मजदूर दलित हैं कितने | जितने अछूत मजदूर भी उतने ॥

नहीं ! सूत मिलों के बतलाओ | चरखा सूत विभाग में जाओं ॥

---

[1]. रामदास निमेश - भीमकथाअमृतम्, , पृ. 27

[2]. वही, पृ. 35

सर्वाधिक अछूत ही उसमें | मिले न्यूनतम वेतन जिसमें ||"[1]

अत: कहा जा सकता है कि उपर्युक्त विवेचन में महाकवि ने संवाद शैली का प्रयोग किया है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि, विवेच्य महाकाव्य की भाषा-शैली, पात्रानुकूल, प्रसंगानुकूल और चरित नायक के जीवनप्रवाह के अनुकूल तथा सीधी-सादी और सरल है।

4.4.7 नाम / शीर्षक :

हिंदी साहित्य में महाकाव्य का नामकरण करने के लिए विविध पद्धतियों का आधार लिया जाता है। इसमें कुछ महाकाव्य का नाम स्थान या घटना के आधार पर रखा जाता है। तथा कुछ महाकाव्य का नाम मुख्य पात्र, नायक या नायिका के नाम पर रखा जाता हैं। इसके आधार पर ही महाकवि निमेश जी ने 'भीमकथाअमृतम्' महाकाव्य का नाम नायक भारतरत्न, बोधिसत्व डॉ. भीमराव अम्बेडकर जी के नाम पर रखा है। अर्जुन सिंह जी का कहना है कि "भारतीय संस्कृति के मूल्यों को स्थापित करते हुए श्री निमेश जी ने भारतरत्न बाबासाहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर के समस्त जीवन वृत्तांत को इस महाकाव्य में दर्शाया है। डॉ. अम्बेडकर मेहनतकश लोगों के लिए संघर्ष करते रहे। ऐसे महापुरूष अपने सुकृत्यों से स्वयं साक्षात् महाकाव्य बन जाते है।"[2] साथ ही कहा जा सकता है कि महाकवि निमेश जी ने विवेच्य महाकाव्य के आधार पर डॉ. अम्बेडकर जी के चरित्र को हमारे सामने प्रस्तुत करने के लिए इस महाकाव्य का सृजन किया है। 'भीमकथाअमृतम्' शीर्षक में 'भीम' तथा 'कथा' यह दो शब्द हैं। इसमें से 'भीम' यह शब्द भीमराव अम्बेडकर जी के नाम से संबंधित है। प्रस्तुत महाकाव्य में महाकवि निमेश जी ने डॉ. अम्बेडकर जी के जीवन से संबंधित अलग-अलग कथाओं और घटनाओं का वर्णन विस्तृत ढंग से प्रस्तुत किया है। इसके कारण महाकवि ने प्रस्तुत महाकाव्य का नामकरण 'भीमकथाअमृतम्' यह किया हैं।

---

[1]. रामदास निमेश - भीमकथाअमृतम्, पृ. 116

[2]. रामदास निमेश - भीमकथाअमृतम्, विद्वानों की सम्मतियाँ से उद्धृत

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि, महाकवि निमेश जी ने 'भीमकथाअमृतम्' यह नाम महाकाव्य के नायक डॉ. अम्बेडकर के नाम के आधार पर रखा है। तथा यह नाम या शीर्षक सार्थक, संक्षिप्त मौलिक, सारगर्भित तथा कृति के अनुकूल है।

4.4.8 उद्देश्य :

किसी भी महाकाव्य का परिक्षण करने के लिए विद्वानों ने उसके महत्त्वपूर्ण तत्त्व बताए हैं। उनमें उद्देश्य इस तत्त्व का स्थान महत्त्वपूर्ण माना जाता है। किसी भी कृति का निर्माण करने के पीछे उस रचना के रचनाकार का कोई उद्देश्य होता है। इस प्रकार महाकवि निमेश जी का भी 'भीमकथाअमृतम्' महाकाव्य लिखने के पीछे विशिष्ट उद्देश्य रहा है। महाकवि ने स्वयम् इस रचना के उद्देश्य के बारे में कहा है कि, "बाबासाहब की आदर्श जीवन लीला को काव्य के माध्यम से देश के घर-घर पहुँचाना ताकि लोग उनके संघर्ष, उनकी कर्तव्यनिष्ठा, उनके त्याग, उनकी ईनामदारी, उनके रहन-सहन के जीवन स्तर की जानकारी जन-जन तक पहुँचे और इस उत्पीड़क वर्ण आश्रमी सामाजिक व्यवस्था को देश में उखाड़ फैंकने के लिए एक क्रांति उठ खड़ी हो।"[1] इसके आधार पर कहा जा सकता है कि महाकवि ने विवेच्य महाकाव्य का सृजन डॉ. अम्बेडकर जी के कार्यों तथा उनके जीवन का परिचय सर्व-सामान्य जनता को मिले इसके लिए किया है। इसके साथ ही सतीश चंद्र शुक्ल जी ने इस महाकाव्य के उद्देश्य के बारे में लिखा है कि, "इस महाकाव्य के लिखने का उद्देश्य सामाजिक न्याय के लिए संघर्ष पैदा करना है।"[2] तथा महाकवि निमेश जी ने लिखा है कि, "जहाँ तक मेरी साहित्य साधना के उद्देश्य का प्रश्न है तो वह यह है कि वर्तमान हिंदू समाज व्यवस्था में व्यावहारिक रूप में परिवर्तन ला देना ही है। या यो कहें की बाबासाहब के सामाजिक परिवर्तन एवं एकता, स्वतंत्रता एवं भाईचारे की स्थापना "[3] करना ही महाकवि का उद्देश्य है।

उपर्युक्त बातों के आधार पर कहा जा सकता है कि, डॉ. अम्बेडकर के चरित्र का चित्रण करना तथा भारत देश में हिंदू धर्म में जाति के नाम पर वर्णित समाज व्यवस्था को

---

[1]. परिशिष्ट से उद्धृत

[2]. रामदास निमेश - भीमकथाअमृतम्,विद्वानों की सम्मतियाँ से उद्धृत

[3]. महाकवि रामदास निमेश जी के द्वारा प्राप्त पत्र से उद्धृत

नष्ट करना और दलित समाज के लोगों का जीवन सुखी तथा समृद्ध बनाना विवेच्य महाकाव्य का मूल उद्देश्य है। साथ ही रामदास निमेश ने भक्ति भाव से डॉ. अम्बेडकर के जीवनवृत्तांत को एक भीम सेनानी के रूप में, एक समाज के सजग प्रहरी के रूप में, भीम विचारों को पाठकों के सामने रखने की कोशिश की है। उसमें उन्हें आशातीत सफलता मिली है।

समन्वित निष्कर्ष :

महाकवि रामदास निमेश जी के द्वारा लिखित 'भीमकथाअमृतम्' महाकाव्य का अध्ययन करने के पश्चात हम इस निष्कर्ष तक पहुँचते हैं कि, महाकाव्य के परम्परागत लक्षणों के आधार पर विवेच्य महाकाव्य की रचना सर्गबद्ध रूप में हुई है। प्रस्तुत महाकाव्य की रचना महाकवि ने नौ स्कन्धों में की है। प्रस्तुत महाकाव्य एक चरित्र प्रधान महाकाव्य है।

विवेच्य महाकाव्य में महाकवि ने नायक के रूप में आधुनिक भारत के इतिहास प्रसिद्ध व्यक्ति भारतरत्न डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर जी के चरित्र के विविध पहलु हमारे सामने प्रस्तुत किए हैं। इसके साथ ही नायक के चरित्र का चित्रण करने के लिए अन्य पात्रों की योजना महाकवि ने की है।

विवेच्य महाकाव्य में महाकवि ने वीर, करूण, शृंगार, वात्सल्य और रौद्र आदि रसों का वर्णन किया है। रस के साथ ही विवेच्य काव्य ग्रंथ में महाकवि ने दोहा, चौपाई और तुकांत इस छदों का प्रयोग किया है।

हिंदी साहित्य में लिखे प्राचीन महाकाव्यों की भाँति विवेच्य महाकाव्य में महाकवि ने प्रभात, संध्या, नगर, वन, पर्वत, ऋतु आदि का सुंदर वर्णन किया हैं। साथ ही सत्याग्रह, सभा और विवाह आदि का वर्णन मिलता है। इसके साथ ही महाकवि ने प्रस्तुत काव्यग्रंथ में खड़ीबोली और कवीरदास जी की सधुक्कड़ी भाषा का प्रयोग किया है। शैली की दृष्टि से देखा जाए तो प्रस्तुत काव्यग्रंथ में वर्णनात्मक, मनोवैज्ञानिक, प्रश्नोत्तर, सरल तथा संवाद शैली का प्रयोग मिलता है।

विवेच्य महाकाव्य का नाम महाकवि ने काव्यग्रंथ के नायक डॉ. अम्बेडकर जी के नामपर आधारित रखा है। आलोच्य काव्यग्रंथ का उद्देश्य डॉ. अम्बेडकर जी के चरित्र को सामान्य जनता के सामने प्रस्तुत करना तथा देश में धर्म या जाति के आधार पर वर्णित समाज व्यवस्था को नष्ट करना यही है।

उपर्युक्त सारी जानकारी के आधार पर हम कह सकते हैं कि, महाकवि निमेश जी के द्वारा लिखित 'भीमकथाअमृतम्' यह एक सफल महाकाव्य है।